50 Years of full Statehood of Meghalaya

The State of Meghalaya is located in north-east part of India. The State was carved out of Assam as an autonomous state in April 1970 and was declared a full-fledged State in January 1972. It is bounded by Bangladesh on the South and West and Assam on the West, North and East. It extends for about 300 kilometres in length and about 100 kilometres in breadth. The state has been divided into 11 districts and 46 C & RD Blocks for administrative purposes.

Tucked away in the hills of eastern sub-Himalayas is Meghalaya, one of the most beautiful State in the country. Nature has blessed her with abundant rainfall, sun-shine, virgin forests, high plateaus, tumbling waterfalls, crystal clear rivers, meandering streamlets and above all with sturdy, intelligent and hospitable people.

Emergence of Meghalaya as an Autonomous State on 2nd April, 1970 and as a full-fledged State on 21st January, 1972 marked the beginning of a new era of the geo-political history of North Eastern India. It also marked the triumph of peaceful democratic negotiations, mutual understanding and victory over violence and intrigue.

The State is subject to vagaries of the monsoon. The average annual rainfall is about 2600 mm over western Meghalaya, between 2500 to 3000 mm over northern Meghalaya and about 4000 mm over south-eastern Meghalaya. There is a great variation of rainfall over central and southern Meghalaya. At Sohra (Cherrapunjee), the average annual rainfall is as high as 12,000 millimetres, but Shillong located at a distance of about fifty kilometres from Sohra receives an average of 2200 mm of rainfall annually.

Meghalaya is one of the States in India covering an area of approximately 22,429 square kilometres, out of this area about 70% of the state is forested. The Meghalaya subtropical forests eco region encompasses the State; its mountain forests are distinct from the lowland tropical forests to the north and south. Meghalaya has predominantly an agrarian economy with a significant commercial forestry industry. The State is geologically rich in minerals. The state has about 1,170 kms of national highways. It is also a major logistical centre for trade with Bangladesh.

Meghalaya has an ideal location advantage for South East Asia Market. The neighbouring countries of India viz Bhutan, Bangladesh, Myanmar has been involved with the State for business and commerce. It has a huge potential to reach other South Asian countries as well. Meghalaya is also geographically rich in minerals and has the potential for industrial set-ups based on these mineral resources. Above all, the Meghalaya Industrial Policy is framed for the ease of doing business and increase trade and commerce. The added advantage being the climate in Meghalaya is good for the development of electronics chips.

The art and craft of Meghalaya has the uniqueness of its own. They are very intricately made and beautiful to look at. Tourist coming to this northeastern part are mesmerized to see the sheer wonder of art and craft of Meghalaya. The abundance of bamboo makes it possible for the artists to make the bamboo and cane products. The three tribes of Meghalaya-the Garos, the Khasis and the Jaintias are apt in making different kinds of cane and bamboo products and in weaving. These products have now received recognition not only in the national market but also in the international market and are much in demand.

Department of Posts is pleased to issue a Commemorative Postage Stamp to commemorate 50 years of full Statehood of Meghalaya.

Credits:

Stamps/FDC/Brochure	:	Shri Suresh Kumar
Cancellation Cachet	:	Smt. Nenu Gupta
Text	:	Based on information received from the proponent

डाक विभाग
Department of Posts

विवरणिका
BROCHURE

मेघालय के पूर्णराज्य के 50 वर्ष
50 Years of full Statehood of Meghalaya

मेघालय के पूर्ण राज्य के 50 वर्ष

मेघालय राज्य, भारत के पूर्वोत्तर भाग में स्थित है। अप्रैल, 1970 में मेघालय, असम से अलग होकर एक स्वायत्त राज्य के रूप में अस्तित्व में आया। इसे जनवरी, 1972 में एक पूर्ण राज्य का दर्जा प्राप्त हुआ। मेघालय दक्षिण तथा पश्चिम में बांग्लादेश से घिरा है और तो दूसरी तरफ पश्चिम, उत्तर और पूर्व में असम राज्य से घिरा हुआ है। इसकी लंबाई लगभग 300 किलोमीटर और चौड़ाई लगभग 100 किलोमीटर है। इस राज्य को प्रशासनिक उद्देश्यों के लिए 11 जिलों और 46 समुदाय एवं ग्रामीण विकास ब्लॉक में विभाजित किया गया है।

देश के सबसे खूबसूरत राज्यों में से एक मेघालय, पूर्वी उप–हिमालय की पहाड़ियों में बसा है। इसकी प्राकृतिक खूबसूरती देखते ही बनती है। यहां प्रचुर वर्षा, धूप, घने वन, ऊंचे पठार, गिरते झरने, साफ़ एवं स्वच्छ नदियां, बहती धाराएं हैं। साथ ही, यहां के लोग स्वस्थ, बुद्धिमान और अच्छे मेजबान भी हैं।

2 अप्रैल, 1970 को एक स्वायत्त राज्य के रूप में और 21 जनवरी, 1972 को एक पूर्ण राज्य के रूप में मेघालय के अस्तित्व में आने से पूर्वोत्तर भारत के भू–राजनीतिक इतिहास के एक नए युग का आरंभ हुआ और जिसके जरिए शांतिपूर्ण लोकतांत्रिक वार्ता और आपसी सहमति से हिंसा और कुचक्र पर विजय प्राप्त हुई।

यह राज्य मानसून की अनिश्चितताओं के अधीन है। पश्चिमी मेघालय में औसत वार्षिक वर्षा लगभग 2600 मि.मी., उत्तरी मेघालय में 2500 से 3000 मि.मी. और दक्षिण–पूर्वी मेघालय में लगभग 4000 मि.मी. है। मध्य और दक्षिणी मेघालय में वर्षा में एक बड़ी भिन्नता है। सोहरा (चेरापूंजी) में, औसत वार्षिक वर्षा 12,000 मि.मी. से अधिक होती है, लेकिन सोहरा से लगभग पचास किलोमीटर की दूरी पर स्थित शिलांग में वार्षिक औसत वर्षा 2200 मि.मी. तक होती है।

मेघालय, भारत के उन राज्यों में से एक है, जिसका कुल क्षेत्रफल लगभग 22,429 वर्ग किलोमीटर है और जिसका 70% भाग वन से घिरा हुआ है। मेघालय में उपोष्ण कटिबंधीय वन पर्यावरण क्षेत्रों का विस्तार है; इसके पर्वतीय वन, उत्तर और दक्षिण की तलहटी के उष्णकटिबंधीय वनों से भिन्न हैं। मेघालय में प्रमुख रूप से कृषि आधारित अर्थव्यवस्था है जिसमें वाणिज्यिक वन उद्योग का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। यह राज्य भौगोलिक रूप से खनिजों से समृद्ध है। इस राज्य में लगभग 1,170 कि.मी. लंबा राष्ट्रीय राजमार्ग हैं। यह बांग्लादेश के साथ व्यापार के लिए एक प्रमुख लॉजिस्टिक केंद्र भी है।

मेघालय, दक्षिण–पूर्वी एशिया बाजार के लिए एक आदर्श स्थान है। भूटान, बांग्लादेश, म्यांमार जैसे भारत के विभिन्न पड़ोसी देश व्यापार और वाणिज्य के लिए मेघालय के साथ जुड़े रहे हैं। इस राज्य की अन्य दक्षिण एशियाई देशों के साथ पहुंच बनाने की भी काफी संभावनाएं हैं। मेघालय, भौगोलिक रूप से खनिजों से समृद्ध भी है और खनिज संसाधनों के आधार पर औद्योगिक स्थापना की क्षमता रखता है। मेघालय औद्योगिक नीति, उपरोक्त आधार पर व्यवसाय और व्यापार करने में सरल और वाणिज्य में वृद्धि हेतु बनाई गई है। मेघालय की जलवायु की अन्य विशेषता है कि यह इलेक्ट्रॉनिक्स चिप्स के विकास के लिए अच्छी है।

मेघालय की कला और शिल्प की अपनी एक विशिष्टता है। ये दिखने में जटिल और आकर्षक है। इस पूर्वोत्तर भाग में आने वाले पर्यटक, मेघालय की कला और शिल्प की वास्तविक चमत्कृतियों को देखकर मंत्रमुग्ध हो जाते हैं। बांस की प्रचुर मात्रा से कलाकारों के लिए बांस एवं बेंत के उत्पाद बनाना संभव हो जाता है। मेघालय की तीन जनजातियां–गारो, खासी और जयंतिया को विभिन्न प्रकार के बेंत एवं बांस के उत्पाद बनाने के साथ–साथ बुनाई में महारत हासिल हैं। इन उत्पादों को अब न केवल राष्ट्रीय बाजार में बल्कि अंतरराष्ट्रीय बाजार में भी पहचान मिली है और इनकी काफी मांग भी है।

डाक विभाग मेघालय के पूर्ण राज्य के 50 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में एक स्मारक डाक टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार :

डाक टिकट / प्रथम दिवस आवरण / विवरणिका : श्री सुरेश कुमार

विरूपण कैशे : श्रीमती नीनू गुप्ता

पाठ : प्रस्तावक द्वारा उपलब्ध कराई गई सामग्री से संदर्भित

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	:	500 पैसे
Denomination	:	500 p
मुद्रित डाक–टिकटें	:	305100
Stamps Printed	:	305100
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

मूल्य ₹ 5.00